अमर बानियाँ 'लोहोरो' की चार कविताएं

अनुवादक : सुवास दीपक
संपर्क : 9832036893

(1)

(??????)

रास्ते में मिलते
अक्सर नमस्कार करता
महाआस्था के हजूर को
आजकल वहाँ पहुँचते
चुपचाप हाथ हिलाता हूँ
केवल उसके कुत्ते को।

(2)

नियति

न गर्मी में शीतलता
न सर्दी में तपिश
न लज्जा में वस्त्र
न देती है 'भूख में भात'
सरकारी महकमें में बाधा बन जाती है
'हमारी जाति।'

(3)

निष्कर्ष

न पद है
न पैसा
न शिक्षा

न प्रतिष्ठा !
इसीलिए
अवहेलना ही अवहेलना।

(4)

अमानवता के घोर प्रतिवाद में मौन कविता

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

(**परिचय :** अमर बानियाँ 'लोहोरो' सिक्किम के नेपाली-हिंदी कवि हैं। 'लोहारो' की कविताएं मूलतः नेपाली भाषा में रचित हैं। (संपर्क सूत्र : 8159949036) इसका अनुवाद सुवास दीपक द्वारा किया गया है। सुवास दीपक सिक्किम के प्रथम हिंदी कथाकार, अनुवादक एवं पत्रकार हैं।)